

शोभा प्यारी (१४७)

कैसी झूले की शोभा प्यारी बनी है
गोद साईं के झूले अवध धणी है॥

कथा कुंज सारा हरा ही हरा है
कृपा कदम्ब मध्य में खड़ा है
ताहू में झूले की डोरी तनी है॥

प्रीती की डोरी है भावों का झूला
निरखि झुलन हित युगल मन फूला
चारों ओर चरित्र की सुखमा सनी है॥

प्रवाह प्रेम का झूटा है देता कहि न सकत है आनंद जेता
मुस्कान साईं की वर्षा घनी है॥

हर्ष हुलास की हरियाली प्यारी साईं झुलावे साकेत
विहारी

सीय स्वर्ण कमल राम नील मणी है॥

सीयाराम साईं चिर चिर जीओ रूपु सुधा प्रेम अमृत
पीओ

नर नारिनि मिली जै जै भनी है॥